स्वयं में बल भरो और सबमें वही लहर फैलाओ

आज बाबा के पास गई तो बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराते हुए मिले और समाचार पूछा मैंने आस्ट्रेलिया, हांगकांग आदि का सुनाया। उसके बाद विशेष मधुबन में टीचर्स भट्ठी का सुनाया। बाबा सुनते ही बोला – बच्ची, चारों ओर सेवा किया यही आप बच्चों का विशेष कार्य है। सब उमंग-उल्लास में आ जाते हैं और मधुबन की भासना आती है। आजकल तो इसी की आवश्यकता है।

टीचर्स को भी शक्तिशाली बनाना है क्योंकि आगे समय नाज़ुक आना ही है। बड़े स्नेह रूप से जैसे टीचर्स बाबा के नयनों के सामने दिखाई दे रही थी और बाबा नयनों में बच्चों का प्यार समाते हुए बोले – टीचर्स तो बापदादा की राइट हैण्डस हैं। बाप को जो हजारों भुजाओं वाला दिखाया है, वह विशेष टीचर्स का यादगार है। टीचर्स सिर्फ यह भी याद रखें कि हम किसकी भुजायें हैं, राइट हैण्डस हैं, तो रूहानी नशा स्वत: ही रहेगा क्योंकि भुजायें सदा साथ रहती और भुजाओं बिना कुछ हो नहीं सकता। तो बाप भी अकेले कुछ नहीं कर सकते और भुजायें भी बाप बिना कुछ कर नहीं सकती। कम्बाइन्ड हैं। ऐसे कहते बाबा ने कहा – टीचर्स से बाप का बहुत जिगरी दिल से प्यार है क्योंकि हिम्मत रखकर सेवा अर्थ सब त्याग कर समर्पण हुई हैं। तो बाप बच्चों की हिम्मत पर खुश है और आगे भी यही बाप की आश है कि मेरा

एक-एक बच्चा स्वराज्य-अधिकारी बन अनेक परेशान, कमजोर आत्माओं को अपनी शक्तियों के वायब्रेशन दे, उन आत्माओं को भी बाप की कुछ न कुछ अंचली दे। अब तो बच्चों को मर्सीफुल (रहमदिल) स्वरूप का पार्ट बजाना है क्योंकि समय अनुसार आत्माओं को बाप-समान शान्ति-देवा बन शान्ति देनी है। अब वायब्रेशन की सेवा आवश्यक है। इसलिए ही बापदादा ने ४ घण्टे पावरफुल याद का डायरेक्शन दिया है। जब निमित्त टीचर्स अपने में बल भरेंगी तब ही औरों में भी लहर फैलेगी। यह रेसपान्सिबिल्टी टीचर्स की है।

इसके बाद बाबा बोले – टीचर्स तो मेरी फ्रैण्डस हैं, साथी हैं, तो चलों इन्हों को एक खेल कराते हैं। ऐसे कहते ही बापदादा ने सभी टीचर्स को इमर्ज किया। क्या देखा एक लाइट की पहाड़ी थी जो सर्किल मुआफिक थी। हम सभी बाबा के साथ नीचे सर्किल में खड़े थे। पहाड़ी की ३ स्टैप बनी हुई थी। सबको दृष्टि देते बाबा बोले, अभी बापदादा खेल खेल में हर एक को **१- अपने मन की कण्ट्रोलिंग पावर और २- बुद्धि की एकाग्रता ३- संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति** कहाँ तक है - वह दिखायेंगे। इतने में देखा कि बाबा ने एक ताली बजाई तो सब फ़रिश्ते बन उड़ते हुए पहाड़ी की फर्स्ट स्टेप तक पहुंच गये और वहाँ सबके आगे एक छोटा सा वेट मशीन मुआफ़िक गोल यन्त्र था, उसमें परसेन्टेज काँटे द्वारा दिखाई दे रहा था हर एक का फेस देखते हुए अलग-अलग रूप में दिखाई दे रहा था। यह पहला स्टैप मन की कण्ट्रोलिंग पावर का था। कमाल यह थी कि हर एक को अपना ही दिखाई दे रहा था, दूसरे का नहीं दिखाई दे रहा था। इतने में बाबा ने दूसरी ताली बजाई तो सब उड़ते हुए फ़रिश्ते सेकण्ड स्टैप पर पहुँच गये। वहाँ फिर हर एक के बुद्धि की एकाग्रता का चार्ट दिखाई दे रहा था। ऐसे ही तीसरे में फिर संस्कार परिवर्तन का चार्ट दिखाई दे रहा था। तीनों स्टेप देखकर फिर बाबा ने ताली बजाई तो सब पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। वहाँ सब सर्किल में खड़े हो गये। इतना संगठन का सर्किल ऐसे लग रहा था जैसे पूनम की महारास का दृश्य दिखाते

हैं। और सेकण्ड में देखा हर एक के साथ बाबा है और हर एक फरिश्तों की रास बहुत रूहानी नशे में समाई हुई कर रहे थे। यह सीन भी बड़ी अच्छी थी। कुछ समय बाद बाबा बीच में खड़े होकर बोले – बच्ची, अब समय अनुसार हर एक समझते हो कि पुरुषार्थ की रफ्तार कितनी तीव्र होनी चाहिए! बच्चे पुरुषार्थ तो करते हैं लेकिन समय प्रमाण स्वयं को हर बात में बाप समान बनाना ज़रूरी है तब ही फुल परसेन्टेज की मंजिल पर पहुँच सकेंगे। इसलिए बाप बच्चों को बहुत-बहुत स्नेह से कहते हैं – बच्चे, हर कदम, हर कर्म, हर बोल बाप समान मिलाते चलो, उड़ते-उड़ाते चलो। यह शब्द बाबा ऐसे बोल रहे थे जैसे घरेलू रूप में बाबा बच्चों से बात कर रहे हैं। फिर बाबा ने सबको बांहों में समाते हुए, मीठी-मीठी दृष्टि देते हुए एक चमकती हुई मणि सौगात रूप में दी, जो शिवबाबा के गोल-गोल रूप में थी, जिसमें ८ शक्तियों के ८ रंग दिखाई दे रहे थे। उसके बाद हमने अपने को साकार वतन में देखा। ओमशान्ति।